[लखयिा__सामान्य_प्रेम_कहानी]

लखयिा रामनारायण पाठक की पुत्री थी. रामनारायण पाठक पेशेवर शक्षिक थे, पर लक्ष्मी की उनपर वशिेष कृपा नहीं थी. परविार के भरण-पोषण के बाद वे बमुश्कलि ही कुछ जोड़ पाते थे. उनकी आमदनी तो वैसे दस हजार मासकि थी, लेकनि खर्च भी कम कहां था ? हाथ छोटा कर वे जो भी जोड़ते पत्नी की दवा-दारू में सब हवन हो जाता था. उनका परविार बहुत बड़ा नहीं था. वे लोग गनि-चुने चार सदस्य थे - दो बेटयिां और अपने दो. बड़ी लड़की लखयिा आठ वर्ष की थी और छोटी मत्रिा पांच की. उसकी पत्नी भगवती खूब धरम-करम करती कतिु, अपने पेट की पीड़ा से वह पीछा नहीं छुड़ा पाती थी. पाठक जी ने उसके पेट की पीड़ा के लएि क्या नहीं कयिा, कई शहरों के नामी-गरामी डॉक्टरों से इलाज करवाए, लेकनि आजकल की बीमारयिों पर तो आग लगे छूटने के नाम ही नहीं लेती ?

एक दनि अचानक रामनारायण पाठक दुनयिादारी से मुक्त होकर चरिस्थायी नद्रिा में लीन हो गए. भगवती की दशा अब आगे नाथ न पछिै पगहा वाली हो गई थी. घर के मुखयिा का इस तरह अचानक चल बसना अच्छे -अच्छों को भी तोड़ कर रख देता है और भगवती तो ठहरी सदा पेट की बीमारी से परेशान रहने वाली एक मरीज. अब उसे जीने की कोई इच्छा नहीं थी कतिु, अपनी बेटयिों के लएि उसे जीना जरूरी था. वह जन्दिगी से भाग नहीं सकती थी. जीवन में सुरसा की तरह मुंह फैलाए खड़ी चुनौतयिों से उसे जूझना ही था. उनसे आर-पार की लड़ाई लड़नी ही थी. उसे कृष्ण बनकर जीवन की इस रणभूमि में अपनी बेटयिों का मार्गदर्शन करना था. आगे की चुनौतयिों ने अपने पति के वषिाद में डूबी भगवती को झकझोर कर रख दयिा था. उसे जल्द ही संभलने पर मजबूर कर दयिा था. उसने भी मरते दम तक चुनौतयिों से लड़ने का प्रण ले लयिा था. आस-पास के छोटे-छोटे बच्चों को ट्यूशन पढ़ाकर वह अपने जीवन की गाड़ी तलि-तलि आगे बढ़ाने लगी थी. अपनी दोनों बेटयिों की परवरशि में उसने खुद को पूरी तरह समर्पति कर दयिा था. कौन जाने कसिका भाग्य में क्या लखिा है ?

लखयिा बड़ी रूपसी थी और स्वभाव से उतनी ही चुलबुली भी. यौवन की दहलीज पर पांव रखते ही उसके रूप ने अद्भुत नखिार ले लयिा था. यौवन की मादकता आंखों में तरिछी चतिवन बनकर, अधरों पर मधुर मुस्कान बनकर और बदन में आलस्य बनकर प्रकट होने लगी थी. उसने वश्वि को मोह लेने वाला जगमोहनिी रूप पाया था. गांव भर में वह सुन्दरता की मसिाल थी. वहां के लोगों को अपनी इस बटियिा पर फ़ख्र था.

मडिलि पास कर अब वह हाई स्कूल में दाखलि हो गई थी. उसके मन में तरह-तरह के सपने पलने लगे थे. उसकी महत्वाकांक्षाएं लताओं की भांति डगिडगाती हुई शखिर की ओर बढ़ने लगी थी. बचपन से ही उसपर जन्दिगी के कड़वे सच का दंश पड़ने लगा था. मुश्कलिें इंसान को मजबूत बनाती है. पतिा की मृत्यु के बाद लखयिा को सर्फि और सर्फि परेशानयिां ही नसीब हुई थी, जसिने कम उम्र में ही उसे काफी परपिक्व कर दयिा था. वह खूब पढ़ना चाहती और आगे बढकर समाज के लएि कुछ करना चाहती थी, कतिु कभी-कभी घर की माली हाल उसे दुष्चतिा में डाल देती थी. उसका मन उदास हो जाता. सारा जोश, जुनून ठंडा पड़ जाता. कतिु, भगवती उसे सदा प्रोत्साहति करती रहती थी.

लखयिा अब सयान हो गई थी. वह कॉलेज में दाखलिा ले चुकी थी. उसका स्वभाव भी काफी बदल गया था. अब वह शर्मलिी, संकोची और गंभीर स्वभाव की हो गई थी. सबसे नज़रे बचाती हुई वह कॉलेज आया-जाया करती थी. लोगों की कुदृष्टि का उसके मन में भय बना रहता था. वह एकदम पग-पग सचेत रहती थी. आए दनि देश-दुनयिा में हो रही घटनाओं से भगवती का कलेजा कांप उठता था. बेटी को वह हमेशा सावधान करती रहती थी. दुनयिा में कुछ लोग बड़े नर्मिोही होते हैं. दूसरों की खुशी उनकी आंखों की करिकरिी बन जाती हैं. दूसरों के सुख-चैन लूटने में उन्हें वैसे ही आनन्द मलिता जैसे कसाई को नरीिह पशुओं के कत्ल करने में मलिता है. खासकर लखयिा जैसी खूबसूरत कलयिों पर तो उनकी गद्धि दृष्टि बनी रहती है. उनकी रसीली जीभ लपलपाने लगती है. उनकी आंखों में हैवानयित का खून चढ़ आता है. वे अपना होशोहवास गंवा बैठते हैं और खलिने से पहले ही उस कली को अपने कठोर हाथों से मसल कर नष्ट कर देते हैं.

लखयिा खूबसूरत थी. नवयुवकों का उसके प्रति आकर्षति होना तो स्वभावकि था. कॉलेज में कई लड़के उसके आगे पीछे मंडराते रहते थे. कतिु, उनकी नयित बुरी नहीं थी. उम्र का तकाजा था कि वे बस ऐसा स्वभावकि रूप से ही कर रहे थे. लखयिा से उनकी नजरें टकरा गई या कसिी बहाने उससे दो टूक बातें हो गई तो वे खुश हो जाते थे. गर्व से खुद की पीठ थपथपा लेते थे. लखयिा को उन लड़कों से कोई भय नहीं था. उसे भय तो सर्फि ललन से था. ललन बड़े बाप की बगिड़ैल औलाद था. दनि-रात वह अपनी ऐय्यासी में लगा रहता था. दुनयिा की कोई ऐसी बुरी आदत शेष नहीं बची थी, जसिे उसने नहीं अपनाई हो. ड्रग से लेकर जुआ तक कुछ भी उससे अछूता नहीं था. उसका बाप धुरंधर सहि भी कुछ वैसा ही दबंग कसि्म का आदमी था. वह उस इलाके का कोयला माफयिा का डॉन था. वहां की पुलसि भी उसके द्वार पर हाजरिी देने जाती थी. उसकी करतूतों से जन-जन

परचिति था कति, कसिी के पास उसके वरिूद्ध मुंह खोलने की ताकत नहीं थी. उसके वरिूद्ध जाने वालों को अह सीधे उठवा देता था.
ललन उसी कॉलेज में पढ़ता, जहां लखयिा पढ़ती थी. बाप का ही पानी बेटा ने भी लयिा था. अभी से ही बाप की तरह उसने भी दबंगाई शुरु कर दी थी. कॉलेज आना-जाना तो वैसे वह कम ही करता था. उसका ज्यादा समय तो घर और कॉलेज से बाहर ऐय्यासी करने में ही बतिता था. कति, वह जब भी कॉलेज आता वहां हड़कंप मच जाता था. वहां की लड़कयिां इधर-उधर छपिती फरिती और भय से कोई भी उसके सम्मुख नहीं आती थी. कसिी लड़की पर अगर उसकी बुरी नजर पड़ गई तो फरि उसकी खैर नहीं. उसकी इज्जत-आबरू बच नहीं पाती थी. कॉलेज की कई लड़कयिां उसके हवश का शकिार हो चुकी थी. उसके खलिाफ पुलसि, थाने सब कुछ हुआ था लेकनि, ढाक के वही तीन पात. आज तक उसे कोई सजा नहीं दलिवा पाया था. उसकी बुरी नजरों से बच कर रहने में ही सबको बुद्धमिानी लगती थी.
एक दनि अचानक लखयिा का ललन से सामना हो गया था. वह कॉलेज से बाहर नकिल ही रही थी कि अचानक कॉलेज के प्रवेश द्वार पर उसे अपने दोस्तों के साथ आता हुआ ललन मलि गया. वह डरी सहमी सरि झुकाए, कतिाबों को सीने से लगाए आहस्तिा-आहस्तिा आगे नकिल गई थी. शुक्र था कि उसने लखयिा को सर्फि घूरकर देखा ही था. उसने ना कसिी तरह की रोक-टोक की और ना ही उसके साथ कोई बदतमीजी की. वरना उसकी आदत इतनी अच्छी कहां थी ! वह तो लड़कयिों को सीधे छेड़ना शुरू कर देता था. बदतमजिी पर उतर आता था.
लखयिा सुन्दर थी इसीलएि वह ललन को पहली नज़र में ही भा गई थी. उसके दलि के कसिी कोने में उसने कम्पन्न पैदा कर दयिा था. धीरे-धीरे वह लखयिा का आशकि़ बन गया. ये प्यार-व्यार भी क्या चीज है आज तक कसिी को समझ नहीं आया है. इसकी ना कोई परभिाषा है, ना रूप, ना रंग, ना गंध. ढाई अक्षर के इस शब्द में ही सारा जादू समाया हुआ है, जसिने ना जाने कतिनों को मजनू, रांझा और फरहाद बना डाला है. आज उसी जादू के भंवर में एक और हलाल हो गया था. ललन का वैसे ही ज्यादातर समय सुन्दर-सुन्दर लड़कयिों की बाहों में ही गुजरता था कति, उनमें से कसिी से उसे प्यार नहीं हुआ. उसके दलि की गाड़ी गांव की भोली-भाली नर्दिोष बाला लखयिा पर जा अटकी थी. दोनों के बीच कतिनी असमानताएं थी. ललन जहां बुराइयों के कीचड़ से लथपथ था, वहीं लखयिा मानसरोवर में खलिे कमल की ताजी पंखुड़यिों सी नर्मिल. ललन नष्ठिुर पाषाण दलि था तो लखयिा शरदकाल की अलसाई सुबह में दूब पर पड़ी ओस की बूंद की तरह कोमल.
“साले जो भी हो कति, लखयिा है बड़ी सुन्दर” - एकदनि ललन ने बातचीत के दौरान अपने दोस्तों से कहा.
कौन लखयिा ? - उसके दोस्तों ने हैरानी से पूछा.
वही नई लड़की, डरी सहमी-सी नज़रे झुकाए चलने वाली. - ललन ने शब्दों के अनुरूप अपना सर हलिाते हुए कहा.
उसके दोस्तों को बड़ा आश्चर्य हुआ. आज तक उसने कसिी भी लड़की को उसका नाम लेकर संबोधति नहीं कयिा था. उसकी जुबान पर लड़कयिों के लएि बस ‘लौंडयिा’ शब्द ही आता था. लड़कयिों के प्रति न तो उसके मन में कोई सम्मान था और ना ही इज्जत. उन्हें केवल वह उपभोग की वस्तु मानता था. कति, आज अचानक लखयिा के लएि उसके मन में सम्मान देखकर उनके दोस्तों को हैरानी हुई.
क्यों आपको उसका नाम कैसे पता ? - एक दोस्त ने पूछा.
ललन मुस्कराते हुए बोला - मैंने उसकी बायोग्राफी पता कर ली है. वह बसिनपुर के स्वर्गवासी शक्षिक रामनारायण पाठक की बेटी है. ईमानदारी के क्षेत्र में उसके पतिाजी का काफी नाम था. पापा बता रहे थे कि एक बार उसके साथ पापा का भी पंगा हो गया था. वह पापा को अंदर करवाने की धमकयिां भी दे गया था कति, कस्मित से वह खुद ही ऊपर चला गया था, वरना पापा को ही अपना हाथ गंदा करना पड़ता.
तो तू उसपर इतना हमदर्दी क्यों जता रहा है ? - दूसरे दोस्त ने पूछा.
एक्चुअली वह मुझे बहुत प्यारी लगती है. उसे देखते ही मेरे दलि में कुछ-कुछ होने लगता है. - ललन ने कहा.
तब बताओ. कब तुम्हारी सेवा में उसे हाजरि करूं ? - तीसरे दोस्त ने कहा.
नहीं....नहीं उसके साथ मैं ऐसा नहीं कर सकता. उसे दुख होगा. मैं तो उसे दलि की रानी बनाना चाहता हूं. उसका सच्चा प्यार पाना चाहता हूं. उसके मन को जीतना चाहता हूं. तुम लोग उसके साथ कोई बदतमीजी मत करना - ललन ने सभी को चेताया.
कॉलेज में कई बार लखयिा का सामना ललन से हुआ कति, उसके साथ कसिी प्रकार की कोई बदतमीजी नहीं हुई. धीरे-धीरे लखयिा के मन में ललन से जो डर था वह जाता रहा. ललन के स्वभाव में भी काफी बदलाव आ गया था. उसने भी अपनी बुरी हरकतें कम कर दी थी. कम से कम कॉलेज में तो उसने शराफत दखिानी शुरू कर दी थी. अब ना कसिी लड़की को वह छेड़ता और ना ही कसिी के साथ कोई बदतमीजी करता. उसने अपनी पाशवकिता त्याग दी थी और इनसान के दल में शामलि होने के लएि वह पंक्ति में खड़ा हो चुका था.
एक दनि उसने कॉलेज कैम्पस के बाहर रास्ते में लखयिा को रोक कर कहा - लखयिा ! मैं तुम्हें चाहने लगा हूं

और तुमसे शादी करना चाहता हूं.
लखिया ने कुछ जवाब नहीं दिया और वह आगे बढ़ गई. लड़कियों की चुप्पी में ही हां छिपा होता है इसी मानसिकता में आधी दुनिया जीती है. इसी मानसिकता की वजह से ना जाने कितने आशिकों के दिल का आशियाना उजड़ा है. कितने देवदास बनकर दर-दर भटकते रहे है. कितनों ने अपना सुख-चैन गंवाया है और ना जाने कितनों ने अपनी जान गंवाई या फिर निर्दोष लड़कियों पर आफ़त ढ़ायी है.
ललन भी आज उसी मानसिकता का शिकार हुआ था और उसने मन ही मन मान लिया था कि लखिया को उसका प्रस्ताव मंजूर है लेकिन, वह शर्म से बोल नहीं पा रही है. अपने दोस्तों में भी उसने यह बात फैला दी. शीघ्र ही यह बात पूरे कॉलेज में वायरस की तरह फैल गई. लखिया से कई सवाल होने लगे, जिसका कोई जवाब उसके पास नहीं था. कुछ लड़कियों ने तो उसपर ताना कसना भी शुरू कर दिया था. सबकी नज़रों में वह गिरने लगी थी. कॉलेज के इस माहौल में उसका दम घुटने लगा था. कॉलेज में उसके बारे में हो रही तरह-तरह की बातें अब उसके बर्दाश्त से बाहर हो गई थी. एक दिन तंग आकर उसने ललन से ही दो- दो हाथ कर लेने का फैसला कर लिया.
तुम्हारी हिम्मत कैसी हुई मेरे बारे में ऐसी अफ़वाह फैलाने की ? किसने कहा कि मैं तुमसे शादी करने के लिए तैयार हूं ? मेरी किस्मत फ़ूटी नहीं है, जो मैं तुमसे शादी करूंगी. तुम्हारे जैसे गुंडों से शादी करने से भला है कि मैं गंगा में कूद कर अपनी जान दे दूं. - सबके सामने उसने ललन को एक दिन झाड़ लगा दी.
उस दिन के बाद वह कॉलेज में बहुत कम ही दिखी. कॉलेज से एक तरह से उसका मन घबरा गया था. कॉलेज की सारी बातें उसने अपनी मां को बता दी. मां का दिल घबरा गया. उस दबंग के विरुद्ध जाने का मतलब खुद के ही पांव में कुल्हाड़ी मारना था. उसकी मां ने भलाई इसी में समझी कि कहीं कुछ ऊंच-नीच हो जाए इससे पहले बेटी की शादी कहीं कर दी जाए.
आज भगवती के घर खूब चहल पहल थी. आपुस कुटुम्ब लगन-हांडी के साथ एक-एक कर उसके घर आ रहे थे. आस-पास की स्त्रियां अतिथियों की द्वार छेकाई कर उनकी आव-भगत करने में व्यस्त थी. सबके मुखमंडल पर आनन्द और खुशी के भाव नाच रहे थे. भगवती मशीन-सी दौड़ती फिरती सबको अलग-अलग कामों की जिम्मेदारियां सौप रही थी. घर की सजावट का काम भी पूरा हो चुका था. खर्च के हिसाब-किताब की जिम्मेदारी भगवती का भाई दीनानाथ संभाल रहा था. लखिया की शादी में बस दो दिन शेष रह गए थे. मन में वह शादी को लेकर उत्साहित थी किंतु, अंदर से भयभीत भी. ज़्यों-ज़्यों शादी का समय निकिट आ रहा था उसके दिल की धड़कन बढ़ती जा रही थी. आस-पास की हमउम्र लड़कियां उसके घर आकर वहां के वातावरण को गीतमय कर रही थी.
वह दिन भी आ गया, जिसका सभी को बेसब्री से इंतजार था. आज लखिया के लिए दूर शहर से कोई डोली सजाकर उसे लेने आ रहा था. लखिया भी दुल्हन के रूप में पूरी तरह सज संवर कर तैयार थी. लखिया तो सुन्दर थी ही किंतु, दुल्हन के रूप में तो वह अद्भुत लग रही थी मानो स्वर्ग से कोई परी उतर आई हो. वहां का पूरा माहौल आनन्दमय था. भगवती बाहर से प्रसन्न होने का दिखावा कर रही थी किंतु, अंदर ही अंदर वह कलप रही थी. उसने अपना खून से सींचकर जिगर के जिस टुकड़े को बड़ा किया था, आज वह उससे दूर जा रही थी. लाख कोशिशों के बावजूद भी वह खुद को संभाल नहीं पा रही थी. लखिया ने उसे नहीं रोने की सौगंध दे रखी थी किंतु, मां की ममता को भला कौन सा बांध रोक पाता है. एकांत पाते ही वह छुप-छुप कर रो लेती लेकिन, सामने वाले को अपना दर्द का अहसास नहीं होने देती. अपने मन को उसने काफी समझाया और दिल मजबूत किया. बेटी पराया धन है एक ना एक दिन तो उसे डोली में बिठाकर खुद से दूर करना ही पड़ता. जिसपर अपना कोई वश नहीं चले तो भला अपना दिल को नाहक छोटा क्यों किया जाए ?
रात 8 बजे पूरे गाजे-बाजे के साथ वहां बारात आ गई थी. बाहर नाच-गान की धूम चल रही थी और अंदर वरमाला की रस्म के लिए लखिया के मेक-अप को अंतिम रूप दिया जा रहा था. पटाखों के धूम-धड़ाके के साथ मस्ती का माहौल बना हुआ था. सभी अपनी-अपनी धुन में मस्त थे. बारातियों का दल बैंड-बाजे की धुन पर थिरक रहा था. बारातियों की उसी भीड़ में ललन अपने दोस्तों के साथ वहां आ पहुंचा था. वह शराब के नशे में चूर था. डगमगाते कदमों के साथ वह स्टेज तक पहुंचने का प्रयास कर रहा था. वह लखिया को अपना बनाना चाहता था किंतु, अब लखिया उसके हाथ से निकल रही थी. इसीलिए उसकी आंखों में खून सवार हो गया था. उसने ठान लिया था कि अगर लखिया उसकी नहीं हुई तो वह उसे किसी और की भी नहीं होने देगा.
चारों ओर लोग बैंड बाजे की धुन में नाच रहे थे. दुल्हा स्टेज पर बैठा था. बारातियों में दुल्हन की झलक पाने की उत्सुकता बनी हुई थी. उसी समय दुल्हन को उनकी सहेलियां वरमाला के लिए स्टेज पर धीरे-धीरे ला रही थी. दुल्हन को देखते ही बारातियों ने उसका जोरदार स्वागत किया. तालियों और सीटियों से आसमान गुंज उठा. दुल्हन के पांव होले-होले स्टेज की ओर बढ़ रहे थे. उसकी सहेलियां उसे घेरी हुई थीं. दुल्हन के हाथ में आरती की थाली सजी हुई थी और वह मंद-मंद मुस्करा रही थी.
उधर ललन ताक में था. धीरे-धीरे उसने अपने पॉकिट से रिवाल्वर निकाल लिया था. वह जल्दी-जल्दी स्टेज के

करीब पहुंचने का प्रयास करने लगा. वहां भीड़ भी खचाखच थी. वह सभी को धक्का देते हुए आगे बढ़ता गया. वह अब स्टेज के काफी करीब पहुंच चुका था, जहां से वह लखिया को पूरी तरह देख सके. उसने रिवॉल्वर को लोड किया और हाथ धीरे-धीरे थोड़ा ऊपर उठाया. भीड़ से नजरें बचाकर वह लखिया के सीध अपना हाथ ले गया और उसके सीने पर सीधा निशाना साधा.

वहां मस्ती भरा माहौल था. महिलाएं अपने मधुर स्वर में नेग गीत गा रही थी. सबके मुखमंडल पर आनन्द ही आनन्द छाया हुआ था. दुल्हन के रूप-लावण्य को देखकर वहां हर कोई मंत्र-मुग्ध था लेकिन, ललन और उनके दोस्तों के दिल की धड़कन तेज़ हो हई थी. दुल्हन के रूप में लखिया के रूप-सौन्दर्य देखकर ललन के दोस्तों का भी दिल पसीजने लगा था किंतु, अब वे कुछ नहीं कर सकते थे. वे लोग ललन से बहुत दूर खड़े थे और उस भीड़ में ललन तक पहुंचना उनके लिए असम्भव था. ललन की अंगुली रिवॉल्वर के ट्रीगर को स्पर्श करती हुई उसपर अपनी पोजशिन ले चुकी थी. उसकी आंखों में खून सवार था. ट्रीगर दबाने से पहले वह एक बार लखिया को जी भर कर देख लेना चाहता था. लखिया आनन्दमग्न थी. उसके चेहरे पर अद्भुत-सी चमक आ गई थी. जिस लखिया को उसने अपने सामने हमेशा डर से सहमी हुई देखी थी, उसे आज पूर्ण निडर और आत्मविश्वास से लबरेज देखकर वह खुद आश्चर्य चकित था. लखिया ने दुल्हे के ललाट पर तिलक लगाकर उसकी आरती उतारी. उसकी सहेलियों ने दुल्हा और दुल्हन दोनों के हाथों में वरमाला दे दी. वरमाला पहनाने के लिए लखिया ने ज़्योंही अपना हाथ ऊपर किया ठांय...ठांय...ठांय की जोरदार ध्वनि के साथ तीन गोलियां चल गई. भींड़ में एकदम-सी भगदड़ मच गई थी. किसी की समझ में कुछ नहीं आ रहा था, बस सब अपनी जान बचाने के लिए बेतहासा इधर-उधर भागे जा रहे थे.

गोलियां चलने की आवाज़ सुनते ही ललन के दोस्त वहां से पलायन हो गए थे और ललन लखिया के पैरों पर गरिकर माफी मांग रहा था. उसकी आंखों में अब खून नहीं बल्कि, पश्चाताप के आंसू थे. उसका नशा उतर गया था और अब वह पूरे होशोहवास में था. अपने दाएं हाथ में वह रिवॉल्वर थामे हुए था, किंतु उसमें अब गोलियां नहीं थीं. सारी गोलियां उसने हवा में दाग दी थी. लोग अब स्टेज पर जमा होने लगे थे.

अपने घुटनों के बल बैठकर उसने लखिया से कहा - लखिया मुझे माफ कर दो. मैं तुम्हें जान से मारने आया था, क्योंकि तुमने मेरी बात नहीं मानी थी. मुझे छोड़कर तुम किसी और से शादी करने जा रही थी. मुझे इसकी खबर मिलते ही मैं आपे से बाहर हो गया था और अपने दोस्तों के साथ तुम्हें जान से मारने आया था लेकिन, मैं चाहकर भी तुम पर गोली नहीं चला सका और सारी गोलियां हवा में दाग दी, क्योंकि मैं तुमसे बहुत प्यार करता हूं. तुमने मेरी आंखें खोल दी है. मैं सचमुच बहुत बुरा हूं. सभी लड़कियां मुझसे डरती हैं इसीलिए कोई मुझसे प्यार नहीं करती. अब तक मैंने सिर्फ़ दूसरों को मजबूर किया था किंतु, आज तुमने मुझे मजबूर कर दिया है. मेरे पास ऐशोआराम की सारी चीजें है फिर भी मैं तुम्हारा प्यार नहीं पा सका, क्योंकि मेरे पास इनसानियत की कमी है. आज मैं तुमसे वादा करता हूं कि अब मैं एक आम इनसान की तरह जिन्दगी जीऊंगा. तुम मेरी नसीब में ही नहीं थी इसीलिए रब से दुआ है कि तुम जहां रहो खुशहाल रहो.

तब तक वहां पुलिस आ चुकी थी. थानेदार साहब ने उसे धकियाते हुए उठाया और उसका कॉलर पकड़ते हुए एकदम कड़क आवाज़ में कहा - साले ! गुंडा गर्दी करते हो ? भीड़ में गोलियां चलाते हो ? चलो आज तुम्हें थाने में बदलाता हूं. ऐसी धारा तुमपर ठोकूंगा कि जिन्दिगी भर जेल में ही सड़ोगे.

हां थानेदार साहब ! इस दरिंदे को कड़ी से कड़ी सजा दीजिए. इसने मेरी बेटी का जीना मुश्किल कर दिया था और आज इसे जान से मारने पहुंच गया है, इसे छोड़िएगा मत. - लखिया की मां ने ललन को कोसते हुए कहा.

नहीं थानेदार साहब ! इसका कोई कसूर नहीं है. यह मेरा अच्छा दोस्त है. हम एक साथ कॉलेज में पढ़ते है और आज मेरी शादी में यह मेरे निमंत्रण पर ही आया था. इसने अपनी खुशी जाहिर करने के लिए आसमान में गोलियां चलाई थी किसी को डराने या हानि पहुंचाने के लिए नहीं. अगर इसे गोलियां चलाने की अनुमति नहीं है तो आप इस पर कानूनी कार्रवाई कर सकते हैं, अन्यथा इसे प्लीज छोड़ दीजिए. - लखिया ने थानेदार साहब से अनुरोध किया.

ठीक है मैडम ! हम ऐसा ही करेंगे. फिलहाल इसने गोलियां चलाई है इसीलिए थाने ले जाना जरूरी है. - थानेदार ने कहा.

जैसा आप उचित समझे, प्लीज. - लखिया ने कहा.

थानेदार साहब ने अपनी जिप्सी में उसे बैठाकर थाने ले गया.

लखिया की मां अपनी बेटी को आश्चर्य से देख रही थी कि आखिर उसने ऐसा क्यों किया ? उसे दण्ड दिलाने के बजाय उसका बचाव क्यों किया ?

लखिया समझदार थी. उसे पता था कि उसपर कड़े आरोप लगाकर भी उसे सजा नहीं दिलाई जा सकती थी. थानेदार नया था. उसे ललन और उसके बाप के बारे में पता नहीं था इसीलिए वह हेंकड़ी दिखा रहा था, वर्ना उसे थाने तक ले जाने की भी हिम्मत उसमें कहां होती ? ललन का हृदय परिवर्तन हो गया था इसीलिए उसे सजा दिलवाकर उसके अंदर छिपे जानवर को वह फिर से नहीं जगाना चाहती थी. शादी की रश्मेंफिर से आरम्भ

हो गई. लोग फरि एक बार झूम उठे.

@गोवन्दि पंडति स्वप्नदर्शी